शोध मंथन, 2017 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 3.8942 (ICRJIFR)
UGC Aproved Journal No. 40908

"भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन व नेहरू"

डॉ0 बबीता सिंह,मेरठ

सारांश

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का अपना एक गौरवमयी इतिहास रहा है। 1857 की क्रान्ति से इसका प्रारम्भ हुआऔर ये महायज्ञ 15 अगस्त 1947 को पूर्ण हुआ। जिसमें अनेकोंराष्ट्रभक्तों ने अपने प्राणों की आहूति देकर भारत माता को गुलामी की बेड़ियो से मुक्त करा कर आजाद ध्वज के साथ जगमग कर दिया। इस आन्दोलन को अनेको उदारवादी, उग्रवादी, बुद्धिजीवियो, समाज सुधारको का संरक्षण प्राप्त हुआ। इनके आलौकिक प्रयासो व नेतष्त्व से ब्रिटिष शासन की नींव ढह गयी।

इन्ही नेतृत्वो में से पं0 जवाहर लाल नेहरू को "करिश्मैटिक नेतृत्व" की संज्ञा प्रदान की गई जिन्होने अपने अथक परिश्रम, पुरूषार्थ तथा नीतियों से भारत को स्वतन्त्र करा कर ही दम लिया और स्वधीनता के पश्चात भी भारत को उसकी लचर व चरमराई हुई स्थिति को अपनी सूझबूझ से संजीवनी प्रदान की। पं0 जवाहरलाल नेहरू ना केवल भारत अपितु अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर भी एक महान् नेता के रूप में अपनी अमिट छाप छोड़ने में कामयाब रहे।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

डॉ0 बबीता सिंह,

"भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन व नेहरू",

शोध मंथन,
दिस0 2017,
पेज सं0 91.97
Artcile No. 16 (SM 656)

http://anubooks.com/
?page_id=581

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के महान यज्ञ का प्रारम्भ 1857 की क्रान्ति के साथ हुआ तथा इसकी पूर्णाहुति 1947 में हुई। इस महान् यज्ञ का सूत्रपात करने वाले सभी महान् देषभक्तों के लिए हम सदा नतमस्तक रहेगे। भारत के मुक्ति संग्राम को द्वितीय महाभारत कहा जा सकता है क्योंकि इसमें भी सत्य तथा न्याय के लिए युद्ध किया गया। यह युद्ध नेताओं, आन्दोलनकारियों, शहीदों, महिलाओं, छात्रों, किसानों, शिक्षित, सम्भ्रान्त तथा पीड़ित जनसमूह की विजय थी।

इस दिशा में महत्वपूर्ण घटना 1857 में घटी जब भारतीय सैनिकों के द्वारा मेरठ से ब्रिटिश शासन की जड़े हिलाने का साहसिक कदम उठाया गया जिसके पीछे अनेकों राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक कारण थे। यद्यपि यह क्रान्ति सफल नहीं रही परन्तु राष्ट्रवाद ने जन्म लिया। इस आन्दोलन ने न केवल बौद्धिक, राजनीतिक बल्कि जनसाधारण के मन को झकझोर कर रख दिया था।भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को नेहरू के नेतृत्व के रूप में ऐसी दिषा मिली जो कि चिरस्मरणीय रहेगी। चूँकि नेतृत्व का सम्बन्ध नेता से है अतः सर्वप्रथम नेतृत्व का अर्थ जानने से पूर्व नेता का अर्थ जानना जरूरी है।

नेता शब्द नेतृत्व की क्षमता रखने वाले व्यक्ति को सम्बोधन है। जो व्यक्ति अपनी बुद्धि, तर्कशक्ति, वाकपटुता, प्रतिभा व शक्ति के द्वारा दूसरे व्यक्तियों को प्रभावित कर पाने की क्षमता रखता हो, उनके व्यवहार को नियंत्रित करने की योग्यता रखता हो तथा उनकी मानसिक स्थिति को भाँपने की योग्यता रखता हो, मार्ग दर्षक बनकर उन्हे संशोधित नियंत्रित,परिवर्तित कर सकता हो तथा उनका आदर्श बनकर निश्चित उद्देश्यों को प्राप्त कर सकने में सफलता प्राप्त करने का अभ्यस्त हो, वह नेता होता है। प्रत्येक क्षेत्र का अपना–अपना नेता होता है। नेता का अपने अनुयायियों व अन्य व्यक्तियों पर इतना प्रभाव होता है कि वो बिना कुछ सोचे समझे उसके उपदेशो को अपने जीवन में उतार लेते है चाहे इन सबमें उनका अहित ही शामिल क्यों ना हो।उनकी मानसिक स्थिति नेता से इतनी प्रभावित होती है कि वो अपनी जान की परवाह किये बिना अपना सब कुछ दाँव पर लगा देते है और नेता इच्छा को ही सर्वोपरि मानते हैं। प्रत्येक व्यक्ति में नेतृत्व की क्षमता नहीं होती यह खास लोगों में पाये जाने वाले एक विशिष्ट प्रकार का व्यवहारिक गुण है। **स्प्राट** ने अपनी पुस्तक "Social Psychology" में लिखा "कोई भी जो दूसरो के लिये आदर्श है, बहुधा एक नेता कहलाता है।"

"Any one who acts as a model to others is often called a leader."

प0 जवाहरलाल नेहरू में अदभुत आकर्शण षक्ति थी न केवल भारत अपितु बाहर भी उनका महत्व बढ़ता गया। उनकी भावनाओं की तीव्रता और अन्याय व उत्पीडन क प्रति बेहद संवेदनशील होने के कारण क्रमशः उनका कार्यक्षेत्र विस्तीर्ण होता गया। उन्होने राष्ट्रीय संघर्ष में स्वयं को पूरी तरह से झोंक दिया था। इन्होने देश की स्वाधीनता के लिए अपनी सारी षक्ति अपना सारा काम और सम्पूर्ण न्याय बुद्धि को समर्पित कर दिया। इन्हीं गुणों के कारण नेहरू दृढतापूर्वक जनस्वीकृत नेता पद की और अग्रसर होते रहे। गाँधी जी से मतभेद होने पर वे राष्ट्रहित के लिए अपनी भावनाओं की तिलाजंली दे देते थे।

"पंडित नेहरू हमारे देष के उज्जवल रत्नो में से एक हैं। उनके त्याग, शौर्य देश–प्रेम और सहृदयता ने उन्हें करोड़ों भारतीयों के गले का हार बना दिया। उनकी राजनीतिज्ञता ओर आदर्शवादिता ने संसार के महान् व्यक्तियों में उनका एक अपूर्ण स्थान बना दिया है। उनके नेतृत्व में भारत का मस्तक ऊँचा हुआ है।"[1] भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के अग्रणी नेता 'जवाहरलाल नेहरू' के नेतृत्व को 'करिश्मेटिक लीडराशिप' की संज्ञा दी गई है। वह उन विशेष शक्तियों के प्रतीक हैं जिन्होने हमारे युग को नया रूप

प्रदान किया। उनके नेतृत्व में कांग्रेस ने कई ऊँचाईयो कोछुआ। गाँधी के बाद वो कांग्रेस के भाग्य विधाता बन गये। उनके कुशल नेतृत्व के कई आधार थे। नेहरू ने अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण अभूतपूर्ण सफलताए प्राप्त की। उनमें विभिन्न व्यक्तियों का संगम था वे एक देशभक्त एक राजनेता एक विचारक एक विद्धान और विषेशतः एक मानवतावादी थे। वे उत्कृष्ट मानवीय गुणों की खान थे जिनके कारण उन्होनें जनता का मन मोह लिया निस्संदेह वह 'युग पुरूष' थे।

नेहरू की आत्मा बेड़ियो से मानव की मुक्ति चाहती थी उनकी देशभक्ति की कोई राजनीतिक सीमा नही थी। उनके लिए भारतीय स्वतंन्त्रता सम्राज्यवाद के विरूद्ध विश्वव्यापी संघर्ष का एक अभिन्न भाग थी। भारतीय स्वाधीनता सेनानी के रूप में पण्डित जी का जीवन संघर्शो तथा कश्टों का इतिहास है।

जवाहरलाल नेहरू का जन्म 14 नवम्बर 1889 को इलाहाबाद में हुआ। इनकी माता का नाम स्वरूप रानी नेहरू और पिताजी का नाम मोतीलाल नेहरू था जो पेशे से वकील थे। नेहरू का लालन–पालन अत्यन्त विषिश्ट वातावरण में हुआ और इन्हे शिक्षा ग्रहण करने के लिए विदेश भेज दिया गया। विदेश में शिक्षा ग्रहण करके नेहरू जब भारत लौटे तो देश अंग्रेज़ों के आत्याचारों से कराह रहा था नेहरू ने देश को अंग्रेज़ों से मुक्त कराने का संकल्प लिया। रामधारी सिंह दिनकर के शब्दो में "पण्डित जी षुरू से ही ऐसे आदमी थे जिनकी दृष्टि जमीन कम क्षितिजो पर ज्यादा रहती। वो किताब पढकर अहले किताब बनना चाहते थे। इतिहास को मोड़कर वे इतिहास के पात्र बनना चाहते थे"[2]।

दिसम्बर 1912 में वे पहली बार बांकीपुर में कांग्रेस के अधिवेशन में शामिल हुए जिसमें इन्हे घोर निराषा हुई। इन्होने महसूस किया कि यह अधिवेषन सिर्फ उच्च श्रेणी के लोगो का उत्सव था।[3] इन वर्षो में नेहरू स्वयं को शुद्ध राष्ट्रवादी मानते। इनकी सहानुभूति गरम दल वालो के साथ अधिक थी, हालांकिये हिंसा की नीति से सहमत नही थे।

'बर्ट्रेड़ रसेल' की किताब 'गैरीबाल्डी' के जीवन चरित्र को पढ़कर ये बहुत प्रभावित हुए, इन्होने सोचा कि जिस प्रकार इटली की आजादी के लिए जोरदार आन्दोलन हुआ वैसे ही भारत की आजादी के लिए भी जोरदार आन्दोलन किया जा सकता है।

जवाहरलाल ने 'यूरोपियन–डिफेंस फोर्स' के ढंग पर भारत में बनायी जा रही डिफेंस फोर्स में जाने के लिए अर्जी भेजी और रंगरूटो की भर्ती के लिए इलाहाबाद में कमेटी बनाई। उनका विश्वास था कि भारतीय नौजावनों को भी फौजी ट्रेनिंग लेनी चाहिए। पहले महायुद्ध ने राश्ट्रीय चेतना में अभूतपूर्व वृद्धि कर दी थी और साथ ही नेहरू ने एनीबिसेण्ट के साथ 'होमरूल' में सम्मलित होकर भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को पुनः जीवित कर दिया था। वे विदेशी शासन के प्रति 'अधिक कठोर तथा भिड़न्त की नीति' को अपनाने के इच्छुक थे। वे कहते जो सत्ता हमारी उपेक्षा करती है और हमारे साथ घृणा का बर्ताव करती है, उसके सामने दबना और उसी से अपील करना बेहद षर्मनाक है।

नेहरू जी अत्यन्त दूरदर्शी मनोवृत्ति वाले थे। उन्होने वकालत छोड़कर स्वयं को पूरी तरह आन्दोलन में झोंक दिया। रौलट एक्ट, अमष्तसर में जलियाँ वाला बाग आदि घटनाओ ने नेहरू को झकझोर कर रख दिया। इन्होनें जनता से कहा 'देश के गुलाम होनें की जिम्मेदारी समस्त भारतीयों की हैं। इसका कारण यह है कि भारतीय अंग्रेज़ों का सहयोग करते हैं। देश की जनता को आजाद होना है

तो अंग्रेज़ों का सहयोग करना बन्द करें। उनके साथ असहयोग करे धैर्य और संयम से काम ले, हिंसा से हिंसा भड़कती है इसलिए अहिंसा का पालन करें।

नेहरू जी देश की नब्ज समझ चुके थे, उनकी गहरी संवेदना किसानों मजदूरों व नौजवानों के प्रति जाग उठी। उन्होनें किसानों मजदूरों से कहा कि–"कमरतोड मेहनत के बदले में उसे अनगिनत बीमारियाँ मिलती हैं। मिट्टी के फर्श पर सोता है शीत, ग्रीष्म, वर्षा सहज ही उसके शरीर को जर्जर बना लेती हैं। एक मुट्ठी चावल उसका भोजन है। सब उसका अपमान, शोसण सदियों से करते चले आ रहे हैं। उसकी इस सहनशक्ति की क्या कोई सीमा है?" इन्होनें किसान आन्दोलन को पूरे देष में फैलाया तथा 6 जनवरी 1921 को इन्होने किसानो से धैर्य से काम लेने तथा पुलिस अथवा फौज के उकसावे में न आने की अपील भी की।

1920 में असहयोग आन्दोलन को इन्होने सारे देश में फैलाने के लिए जगह–जगह की यात्रा कीं। खादी का प्रचार किया, रियासतो को संगठित किया। 1927 में रूस की क्रान्ति का इन पर बहुत प्रभाव पड़ा । इन्होनें कहा "कुछ अरूचिकर पहलुओं के होते हुए भी सोवियत रूस ने मुझे बड़ा आकर्शित किया और मुझे विष्व के लिए एक आषा का संदेष देता प्रतीत हुआ"।[4]

नेहरू के मन में अब राजनीति रच–बस चुकी थी। उन्होनें भारत की समस्या को ब्रूसेल्स के भाशण में दुनिया के सामने रखा कि किस प्रकार निहत्या करके जुदा–जुदा तरीकों से हिन्दुस्तान की जनता की भावना को कुचल दिया गया है। 1929 में नेहरू कांग्रेस के अध्यक्ष निर्वाचित हुए, इस अधिवेषन में इन्होने "पूर्णस्वराज्य" की मांग की तथा समाजवाद को अपनानें पर जोर दिया।ये राश्ट्र के नाम पर धर्म, जाति, संस्कषति को सहारा न बनाने का समर्थन करते थे।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन में जिस जोश वलगन का परिचय इन्होनें दिया ब्रिटिश सरकार इससे घबराकर पुनः पुनः इन्हे जेल भेज देती। लेकिन अंग्रेज सरकार के अत्याचार इन्हे और मजबूत बनाते गये।

1946 में ब्रिटिश सरकार ने नेहरू को अन्तरिम सरकार गठन करने का प्रस्ताव दिया। अन्तरिम सरकार में शामिल होने के बाद पंड़ित जी अधीरता से भारत की महत्ता का स्वप्न देख रहे थे। सितम्बर 1946 को सरकार ने अपना कार्यभार ग्रहण किया और नेहरू ने भावोत्तेजक भाषण दिया।

नेहरू ने देश के भविष्य पर गम्भीरता से विचार करते हुए लिखा था कि देश पर जो विभाजन थोपा जायेगा वह किसी मध्य युगीन सिद्धान्त की तरफ लौटने जैसा होगा। भारत के लिए ऐसी आजादी का इंतजाम किया जाना चाहिए जो केन्द्र को मजबूत बनाये, रियासतो को ज्यादा से ज्यादा स्वायत्ता दे। लेकिन वायसराय की योजना इसके विपरीत थी। वह असल में भारत के टुकड़े–टुकड़े करना चाहता था ओर अपनी योजना को असली रूप देने के लिए उन्हें किसी भी हथकण्डे से परहेज नही था। धार्मिक आधार पर भारत का दो भागो में विभाजन हो गया। हिन्दू राज्य 'भारत' और मुस्लिम राज्य 'पाकिस्तान'। 'नेहरू, व्यक्तित्व और विचार' में 'द गाल ने लिखा है– "जवाहरलाल नेहरू एक महान् राजनीतिज्ञ थे, जिन्होनें अपनें सारे सदगुणों को जनतान्त्रिक सामाजिक प्रगति और शांति में लगा दिया। इनका जबरदस्त असर हिन्दुस्तान के भाग्य पर और परिणाम स्वरूप सारी दुनिया के भाग्य पर पड़ा। मैं फ्रांस की जनता और अपनी ओर से संवेदना प्रकट करता हूँ। मुझे उस महान् राजनेता की याद रहेगी जिसने अपने मुल्क औरशांति के लिए अपना जीवन अर्पित कर रखा था।"[5]

नेहरू का व्यक्तित्व कठिनाईयों के बीच निखरता गया। इसलिए माखनलाल चतुर्वेदी के षब्दो मैं "राष्ट्र निर्माता नेहरू", जिसने राश्ट्र को एकता प्रदान की, उच्च देश भक्त होने के साथ–साथ महानतम् मानवतावादी थे। गाँधीजी को छोडकर उनकी जोड़ का कोई अन्य नही है। तन से जिन्दगी भर संघर्श करने वाला, अपने परिवार भर को बाजी पर लगा देने वाला, धन को सदा तुच्छ समझने वाला किन्तु मन से सदा स्वस्थ, शालीन और निर्मल रहने वाला इतना प्रभावषाली नेता मैने नहीदेखा" ।[6] देश की आजादी के बाद भारत की आर्थिक दशा अत्यन्त जर्जर हो चुकी थी। देश में भीषण बेरोजगारी थी। सामाजिक व्यवस्था छिन्न–भिन्न हो चुकी थी। देष विभाजन होने के कारण देशवासी भावनात्मक रूप से टूट चुके थे। न जाने कितनी समस्यायें मुहँ बाये राष्ट्र के सामने खड़ी थी। ऐसी अवस्था में नेहरू ने अत्यन्त सूझ–बूझ के साथ देष की बागडोर अपने हाथों में लेकर एक नये भारत के निर्माण का सपना देखकर उसको साकार करने के लिए दिन रात कड़ा परिश्रम किया। उन्होनें कहा– "मैने बहुत पहले आजादी के लिए जनता से वायदा किया था अब उसे पूरा करने का वक्त आ गया है। हमे स्वतंन्त्र भारत की एक बिल्डिंग बनानी है जिसमें हमारे देश के सभी बच्चे आयें और अमन शांति का जीवन व्यतीत करें।

नेहरू को धार्मिक राष्ट्रवाद से कोई सहानुभूति नही थी। उन्हे धार्मिक राष्ट्रीयता अत्यन्त बेहूदा लगती थी इसलिए दयानन्द, विवेकानन्द, विपिनचन्द्र पाल, अरविन्द के राष्ट्रवाद में इनकी कोई रूचि नही थी और हिन्दुस्तान की तरक्की के लिए इन्होने ऐलान किया था कि "मुस्लिम लीग" के लिए इनके दरवाजेहमेशा खुले हैं। एक दूरदर्शी राजनेता के रूप में गुट निरपेक्षता की नीति तथा पंचशील के सिद्धान्तो के साथ विश्व समुदाय में एक विषिश्ट पहचान बनाई। भारत के संविधान निर्माण का गौरवमयी एवं चुनौती पूर्ण कार्य भी उन्ही देख रेख में हुआ। निःसन्देह कहा जा सकता है कि नेहरू ने समस्त एशिया की एकता का स्वपन देखा था और भारत के आजाद होने के पश्चात उन्होने इस पर शोध भी आरम्भ कर दिया।इनके अथक प्रयास से मार्च 1947 को बड़ी धूमधाम से यह सम्पन्न हुआ जिसने नेहरू के गौरव को और अधिक बढ़ा दिया और वह सारे एषिया के सम्मानित नेता के आसन पर पहुँच गये। नेहरू ने इतनी उपलब्धियाँ बिना मेहनत, परिश्रम तथा पुरूषार्थ के नही पाई ह ै वह एक महान योद्धा की भाँति स्वाधीनता संग्राम की वेदी पर तपकर निखरे हुए सैनिक हैं। एक सैनिक की भाँति ये हमेशा डटकर समस्याओ का सामना करते रहे और जनता का पग–पग पर विश्वास अर्जित करते रहे। अत्यन्त धनाढ़य परिवार में जन्म लेने के कारण इनका लालन पालन अत्यन्त सुख सुविधाओं के साथ हुआ परन्तु स्वाधीनता की चाह ने इनके जीवन की राह को मोडकर रख दिया।अनेकों बार जेलों में यातनाएं सही, लाठियों के प्रहार सहे। भूख, प्यास कड़ाके की ठंड, भीषण गर्मी सब कुछ सहने की षक्ति इन्होने अपने अन्दर पैदा कर ली थी। ये जनता के ऐसे हमदर्द बनकर उभरे कि वो सुख–दुखः मैं इन्हे अपना सहभागी मानती। भारत की सेवा का अर्थ था लाखो करोड़ो दुखी लोगो की सेवा तथा गरीबी, अज्ञानता, बीमारी और अवसर की असमानता का अन्त। महात्मा गाँधी ने इनकी प्रषंषा करते हुए कहा कि भारत में नवयुवको की कमी नही है लेकिन जवाहर लाल नेहरू के मुकाबले में खड़े होने वाले किसी नौजवान को मैं नही जानता। इतना मेरे दिल में उनके लिए प्रेम है या कहिए कि मोह है लेकिन यह प्रेम या मोह उनकी षक्ति के अनुसार स्थापित है और इसलिए मैं कहता हूँ कि जब तक हाथ में लगाम है हम अपनी इच्छित वस्तु प्राप्त कर ले तो कितना अच्छा है।

पं0 नेहरू की कीर्ति बिना पुरूषार्थ के नही फैली इनके नेतृत्व का आधार व्यवहरिक था। उनका मार्ग दर्षन न केवल भारतवासियो अपितु एषिया के नेताओ के लिए भी अनुकरणीय था। भारत को विश्व में योग्य पद पर ले जाने और न्याय तथा षांति का आधार स्तम्भ बनाने के लिए पं0 नेहरू धन्य रहेगें। पं0 नेहरू केवल राष्ट्रीय स्वतंन्त्रता के लिए नही लड़ते रहे उनके नेतृत्व का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत रहा वो हमेशा अत्याचार पीड़ित जातियों के लिए संघर्ष करते रहे। इतिहास, अर्थव्यवस्था, लोकतन्त्र राष्ट्रवाद, अर्न्तराष्ट्रवाद, मार्क्सवाद, गाँधीवाद, समाजवाद, पंचषील सिद्धान्त आदि सभी पर उनकी राय बेबाक तथा मूल्यवान थी, साथ ही साथ प्रगतिवादी तथा व्यवहारिक भी थी। सन् 1929 से, जब वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष बने, और 1964 तक जब उनका देहावसान हुआ, तक के काल को 'नेहरू युग' के नाम जाना जाता है। नेहरू का नेतष्त्व इतना विस्तष्त, जटिल, सहज व्यवहारिक रहा कि शब्दो में बाँध पाना असम्भव सा लगता है यद्यपि कुछ खामियाँ भी उनके नेतृत्व को कमजोर करती नजर आई परन्तु अनेको विविधताओ से भरे उनके भारतीय राश्ट्रीय आन्दोलन के नेतष्त्व को कोई चुनौती नही दे सका और वे अपनी स्फूर्ति तथा मानसिक स्वतंन्त्रता के दम पर राजनीति के गगन पर निर्बाध चमकते रहे।

अतः उचित ही कहा गया है कि स्वतंन्त्रता की ऊशा से पहले गहन अन्धकार में वह हमारे मार्ग दर्शक बने और स्वाधीनता मिलते ही जब भारत पर संकट आ रहे थे तो विश्वासकी धुरी बने।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. जवाहर लाल नेहरू के भाशण (भाग एक) प्रकाशन विभाग, सूचना प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार 2002

2. **Nehru, Jawaher Lal**
Discovery of India, (New your, John Day and company, 1942)

3- **Nehru, Jawaher Lal**
An Autobiography (London Bodler Head) 1936 P.P 2007-2008

3. **शर्मा, दीपा**
भारत की स्वतंन्त्रता की महान् विभूतियाँ प्रकाषक, पी0सी0 नेगी, सरिता बुक हाउस दिल्ली 1992

4. **वर्मा एण्ड सहल**
महान नेहरू चिन्मय प्रकाशन, जयपुर 1966

5. **चोपडा, प्रभा**
सरदार पटेल, गाँधी नेहरू एवं सुभाश भारत प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006

6. **क्लार्क वारेन हेनरी**
(अनु0 प्रियदर्शन गुप्त) युग दृष्टा नेहरू राजबुक सर्विस नई दिल्ली 2007

7. **उपध्याय, मार्तण्ड**
नेहरू व्यक्ति और विचार सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 1965

8. **नेहरू अभिनन्दन ग्रन्थ**
नेहरू अभिनन्दन ग्रन्थ समिति द्वारा सुरक्षित आर्यावर्त प्रकाषन, कलकत्ता, 1949

9. **चटोपध्याय, बसन्त**

नेहरू का व्यक्तित्व एन0डी0 सहगल एण्ड संस, नई दिल्ली, 1962

10. सरीन, एल0एन0

जवाहर लाल नेहरू एस0 चन्द्र एण्ड कम्पनी, दिल्ली 1969

11. ताराचन्द

अनु0 प्रयोग नारायण तिवारी भारतीय स्वतंन्त्रता आन्दोलन का

इतिहास, व तीसरा खण्ड सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, 1947

12. चतुर्वेदी, जगदीश प्रसाद

हमारा स्वाधीनता संग्राम अरविन्द प्रकाषन, 1997

समाचार पत्र एव पत्रिकाए

1. दैनिक जागरण 20 अक्टूबर, 2008
2. मासिक पत्रिका योजना 1998 फरवरी अंक

संदर्भ

[1] उपाध्याय, मार्तण्ड, 'नेहरू व्यक्तित्व और विचार' सस्ता साहित्य मण्डल नई दिल्ली, 1965 पृ0 259

[2] दिनकर, रामधारी सिंह, 'लोकदेव नेहरू', उद्याचल, पटना 1965, पष्0 77

[3]क्लार्क, वारेन हेनरी, 'युगदृश्टा जवाहरलाल नेहरू', राज बुक सर्विस, शाहदरा, दिल्ली 2007, पृ0 41

[4]Nehru Jawaherlal, 'an autobiography', P-86

[5] नेहरू, जवहार, 'हिन्दुस्तान की कहानी, सस्ता साहित्य मण्डल नई दिल्ली', 1988 पृ0 36

[6] 'नेहरू व्यक्तित्व और विचार' पष्0 274